Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत की विदेश नीति: एक व्यापक अध्ययन

विनोद कुमार विश्नोई *

* एम.ए. नेट (राजनीति विज्ञान) ग्राम - समेलिया, पोस्ट घोड़ास, तह. मांडल, जिला भीलवाड़ा (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता के बाद से ही उसके राष्ट्रीय हितों, भौगोलिक स्थिति, आर्थिक आवश्यकताओं, ऐतिहासिक विरासत और वैश्विक परिदृश्य पर आधारित रही है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति की नींव रखी, जिसमें गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और वैश्विक शांति की अवधारणाएं प्रमुख थीं। बदलते वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक और भू-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति में समय-समय पर आवश्यक बदलाव किए गए हैं। इस शोधपत्र में भारत की विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास, सिद्धांत, प्रमुख घटक, वैश्विक चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा का विश्लेषण किया गया है।

1. भारत की विदेश नीति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1.1 स्वतंत्रता पूर्व पृष्ठभूमि: ब्रिटिश शासन के अधीन भारत की कोई स्वतंत्र विदेश नीति नहीं थी। विदेश संबंध पूरी तरह से ब्रिटिश सरकार द्वारा नियंत्रित होते थे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की भूमिका उभरने लगी थी, विशेष रूप से कांग्रेस द्वारा अंतरराष्ट्रीय औपनिवेशिक विरोध मंचों पर भागीदारी।

1.2 स्वतंत्रता के बाद की नीति (1947-1964): पंडित नेहरू ने भारत की विदेश नीति को दिशा दी। इस कालखंड में निम्नलिखित पहलू उभरकर आए:

गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM): शीत युद्ध के दो ध्रुवों (अमेरिका और सोवियत संघ) से दूरी बनाकर एक स्वतंत्र और संतुलित दृष्टिकोण अपनाना।

पंचशील सिद्धांत: चीन के साथ शांति और आपसी सम्मान पर आधारित पंचशील सिद्धांत का प्रसार।

वैश्विक शांति का समर्थन: संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक मंचों पर शांति और निरस्त्रीकरण की पैरवी।

2. विदेश नीति के प्रमुख सिद्धांत

2.1 गुटनिरपेक्षता (Non Alignmnet): भारत ने शीत युद्ध के दौरान गुटनिरपेक्ष रहकर अपने स्वायत्ता निर्णयों को प्राथमिकता दी। यह नीति भारत को स्वतंत्र विदेश नीति बनाने की शक्ति देती रही।

2.2 रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy): भारत की नीति किसी भी वैश्विक शक्ति के अधीन न होकर अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्णय लेने की रही है।

2.3 क्षेत्रीय नेतृत्व और पड़ोसी प्रथम नीति:दक्षिण एशिया में शांति, स्थिरता और आर्थिक समावेशन को बढ़ावा देना भारत की नीति का हिस्सा रहा है।

2.4 वैश्विक सहभागिता: भारत का उद्देश्य वैश्विक मंचों पर अपनी भूमिका को मजबूत करना और अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।

3. विदेश नीति के प्रमुख आयाम

3.1 पड़ोसी देशों के साथ संबंध

3.1.1 पाकिस्तान

भारत-पाक संबंध

1. भारत-पाकिस्तान संबंध

मुख्य मुद्दे:

कश्मीर विवाद: 1947 से ही दोनों देशों के संबंधों में सबसे बड़ा रोड़ा।

तीन युद्ध: 1947, 1965, 1971 और करगिल संघर्ष (1999)।

आतंकवाद: पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद (26/11, पठानकोट, उरी, पुलवामा)।

भारत की पहल: अटल बिहारी वाजपेयी की लाहौर बस सेवा।

नरेंद्र मोदी का अप्रत्याशित लाहौर दौरा (2015)।

MFN (Most Favoured Nation)का दर्जा वापस लेना।वर्तमान स्थिति: राजनयिक संबंध न्यूनतम स्तर पर।

सीमित व्यापार, कोई द्विपक्षीय वार्ता सक्रिय नहीं।

नियंत्रण रेखा: पर तनाव में कश्मीर मुद्दा, आतंकवाद, युद्ध और सीमा विवाद प्रमुख विषय रहे हैं। हाल के वर्षों में 'सर्जिकल स्ट्राइक' और श्बालाकोट एयरस्ट्राइकश जैसे कदमों ने नई रणनीतिक सोच को दर्शाया है।

3.1.2 चीन

प्रारंभिक सहयोग:

1950 के दशक में 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा।

1962 के युद्ध के बाद रिश्तों में भारी गिरावट।

वर्तमान संबंध:

आर्थिक: चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार (2023 में +110 बिलियन से अधिक), लेकिन व्यापार असंतुलन भारत के खिलाफ।

सीमा विवाद: डोकलाम (2017), गलवान संघर्ष (2020), LAC पर गतिरोध जारी।

रणनीतिक चुनौती: चीन का BRI,CPEC और पाकिस्तान से निकटता भारत के लिए चिंता का विषय।

सहयोग: BRICS,SCO जैसे मंचों पर मिलकर कार्य।

जलवायु परिवर्तन और वैश्विक मंचों पर संवाद।

भारत-चीन संबंधों में आर्थिक सहयोग और सीमा विवाद समानांतर रूप से

चलते रहे हैं। डोकलाम और गलवान संघर्षों ने इन संबंधों में तनाव पैदा किया।

भारत–चीन संबंध सहयोग और संघर्ष : 1962 का युद्ध और सीमा विवाद (LAC) संबंधों पर छाया डाले हुए हैं।डोकलाम (2017), गलवान (2020) जैसी घटनाएं।

सहयोग के क्षेत्र:व्यापार: चीन भारत का सबसे बड़ा आयातक है।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग: BRICS,SCOI

भारत की चिंता:CPECपरियोजना पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरती है।

चीन की Strings of Pearls रणनीति और हिंद महासागर में उसकी उपस्थिति।

3.1.3 नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और श्रीलंका

भारत–नेपाल संबंध

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध:

खुली सीमा और Gorkha सैनिकों की परंपरा।

धार्मिक, भाषाई और सामाजिक जुड़ाव।

विवाद के मुद्दे:

कालापानी–लिपुलेख सीमा विवाद।

नेपाल के नए नक्शे में भारतीय क्षेत्र को दिखाना (2020)।

भारत की भूमिका:

नेपाल में जलविद्युत, इंफ्रास्ट्रक्चर और आपदा प्रबंधन में सहयोग।

बिचौली रास्ते से व्यापार और चिकित्सा सहायता।

नवीन सहयोग:

भारत–नेपाल रेल लिंक, पेट्रोलियम पाइपलाइन।

4. भारत–भूटान संबंध

सबसे घनिष्ठ पड़ोसी:

भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।

भूटान की रक्षा नीति में भारत का गहरा योगदान।

सहयोग के क्षेत्र:

हाइड्रो पावर: ताला, पुनतसांगचू जैसी परियोजनाएँ।

डोकलाम गतिरोध (2017): भारत ने भूटान की संप्रभुता की रक्षा की।

शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यटनरू भारत में भूटानी छात्रों की शिक्षा और इलाज में सहयोग।

5. भारत–बांग्लादेश संबंध

इतिहास:

भारत ने 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रमुख उपलब्धियाँ:

2015 भूमि सीमा समझौता।

नदी जल बंटवारा: गंगा जल समझौता (1996)।

सरहदी प्रबंधन: अंतरराष्ट्रीय सीमा को शांतिपूर्ण बनाने की पहल।

आर्थिक सहयोग:

रेल, सड़क, और बंदरगाह संपर्क का विस्तार।

ऊर्जा व्यापार और संयुक्त परियोजनाएँ।

चुनौतियाँ:

तीस्ता जल समझौता अभी लंबित।

रोहिंग्या शरणार्थियों पर सहयोग की कमी।

6. भारत–श्रीलंका संबंध

सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध:

बौद्ध धर्म, रामायण परंपरा, तमिल संस्कृति।

सहयोग के क्षेत्र:

विकास परियोजनाएँ, आवास निर्माण, रेलवे लाइन पुनर्निर्माण।

संवेदनशील मुद्दे:

श्रीलंका के तमिलों की स्थिति।

चीन की बढ़ती उपस्थिति (हंबनटोटा बंदरगाह, कोलंबो पोर्ट सिटी)।

भारत की रणनीति:

SAARC और BIMSTEC के माध्यम से संबंध मजबूत करना।

सागर नीति: समुद्री सुरक्षा सहयोग।

7. भारत–म्यांमार संबंध

भौगोलिक रणनीतिकता:

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की सीमा म्यांमार से जुड़ी है।

सहयोग के क्षेत्र:

कालादान मल्टीमॉडल प्रोजेक्ट।

IMT ट्राइलेटरल हाईवे (India-Myanmar-Thailand)।

आतंकवाद विरोधी सहयोग (NSCN,PLA,ULFA, पर कार्यवाही)।

चुनौतियाँ:

म्यांमार में सैन्य शासन और लोकतंत्र संकट।

रोहिंग्या संकट और मानवीय सहायता।

8. भारत–अफगानिस्तान संबंध

भारत की भूमिका:

लोकतांत्रिक अफगान सरकार के पुनर्निर्माण में अग्रणी भूमिका।

सलमा डैम, पार्लियामेंट बिल्डिंग, अस्पताल आदि भारत द्वारा निर्मित।

चुनौतियाँ:

तालिबान शासन के बाद संपर्क सीमित।

पाकिस्तान के प्रभाव और चीन की भूमिका बढ़ रही है।

मूल्य आधारित नीति:

भारत अभी भी मानवीय सहायता भेजता है, परंतु तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दी है।

9. भारत–मालदीव संबंध

भौगोलिक महत्व:

हिंद महासागर में रणनीतिक स्थिति।

भारत की SAGAR नीति का मुख्य भाग।

सहयोग:

मालदीव में मेडिकल सुविधा, डिजिटल सहयोग, सैन्य अभ्यास।

तटीय राडार सिस्टम और जल सुरक्षा सहायता।

वर्तमान चुनौती:

चीन की घुसपैठ और 'इंडिया आउट' आंदोलन।

भारत इन देशों के साथ ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध साझा करता है। हाल के वर्षों में बांग्लादेश के साथ भूमि सीमा समझौता और नदी जल समझौते प्रमुख उपलब्धियां रही हैं।

3.3.2 प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ संबंध

3.2.1 अमेरिका

शीत युद्ध काल में दोनों देशों के संबंध ठंडे रहे।

21वीं सदी में संबंधों में उल्लेखनीय सुधार हुआ (2008 परमाणु समझौता एक मील का पत्थर)।

सहयोग के क्षेत्र:

रणनीतिक भागीदारी: 22 डायलॉग, LEMOA,BECA, COMCASA जैसे रक्षा समझौते।

व्यापार: द्विपक्षीय व्यापार +150 बिलियन (2024 तक), टेक्नोलॉजी और स्टार्टअप सहयोग।

डायस्पोरारू अमेरिका में लगभग 4.5 मिलियन भारतीय, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव बढ़ रहा है।

इंडो-पैसिफिक सहयोग: QUAD के तहत संयुक्त रणनीति।भारत-अमेरिका संबंध रणनीतिक साझेदारी, रक्षा सहयोग, परमाणु समझौते (2008) और इंडो-पैसिफिक नीति के इर्द-गिर्द विकसित हुए हैं।

3.2.2 रूस

भारत और रूस (पूर्ववर्ती सोवियत संघ) के बीच रक्षा, ऊर्जा और अंतरिक्ष अनुसंधान में गहरे संबंध रहे हैं।

सोवियत युग से भारत और रूस के संबंध ऐतिहासिक रूप से मजबूत रहे हैं।

1971 की भारत-पाक युद्ध में सोवियत संघ ने भारत का समर्थन किया।

प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग:

रक्षा: ब्रह्मोस मिसाइल, सुखोई विमान, AK-203 राइफल, INS विक्रमादित्य विमानवाहक पोत। 70%से अधिक रक्षा उपकरण रूसी मूल के।

ऊर्जा: कूडनकुलम परमाणु संयंत्र, ऊर्जा सुरक्षा में सहयोग।

अंतरिक्ष: ISROऔर रूस के बीच तकनीकी सहयोग (जैसे Gaganyaanमिशन)।

कूटनीतिक सहयोग: BRICS, SCO, G-20 में साझा सदस्यता।

3.2.3 यूरोपियन यूनियन और यूनाइटेड किंगडम

भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंध

ऐतिहासिक संबंध:

उपनिवेशवाद की विरासत, लेकिन स्वतंत्रता के बाद द्विपक्षीय संबंध स्थिर रहे।

आधुनिक संबंध:

व्यापार: मुक्त व्यापार समझौते पर वार्ता जारी।

शिक्षा: ब्रिटेन भारतीय छात्रों के लिए लोकप्रिय शिक्षा केंद्र है (2023 में 140,000 छात्र)।

प्रवासी संबंध: ब्रिटेन में भारतीय मूल की जनसंख्या सबसे बड़ी (20 लाख से अधिक)।

राजनयिक: ब्रिटेन में भारतीय मूल के प्रधानमंत्री (ऋषि सुनक) भारत के प्रति सकारात्मक संकेत।

विवाद:

कश्मीरी मुद्दों पर ब्रिटेन के कुछ सांसदों के बयान।

खालिस्तानी गतिविधियाँ और भारतीय मिशनों पर हमले।

5. भारत-फ्रांस संबंध

कूटनीतिक मित्रता:

फ्रांस हमेशा भारत का एक स्थिर और भरोसेमंद यूरोपीय भागीदार रहा है।

मुख्य क्षेत्र:

रक्षा: राफेल डील (36 लड़ाकू विमान), स्कॉर्पीन पनडुब्बी निर्माण।

अंतरिक्ष: ISRO-CNES सहयोग।

पर्यावरण: अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) की स्थापना में फ्रांस की भागीदारी।

इंडो-पैसिफिक: भारत-फ्रांस ने साझा रणनीति अपनाई है।

नई पहल:

UPI-Rupay और डिजिटलीकरण पर फ्रांस की सकारात्मक पहल।

सांस्कृतिक और भाषा सहयोग।

6. भारत-जर्मनी संबंध

अर्थव्यवस्था और विज्ञान आधारित साझेदारी:

जर्मनी भारत का सबसे बड़ा यूरोपीय व्यापारिक भागीदार है।

प्रमुख पहल:

व्यापार और निवेश: मर्सिडीज, BMW,Siemens जैसी कंपनियाँ भारत में कार्यरत।

ग्रीन हाइड्रोजन मिशन: भारत-जर्मनी ग्रीन डील सहयोग।

तकनीकी सहयोग: विज्ञान, इंजीनियरिंग, स्किल डिवेलपमेंट में निवेश।

शिक्षा: भारत-जर्मनी स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम, फेलोशिप।

चुनौतियाँ:

जर्मनी की मानवाधिकारों पर संवेदनशीलता और भारत की आंतरिक नीतियों पर टिप्पणियाँ कभी-कभी तनाव का कारण बनती हैं।

व्यापार, शिक्षा और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग। ब्रेक्सिट के बाद ब्रिटेन के साथ द्विपक्षीय समझौतों पर जोर।

3.3 बहुपक्षीय मंचों पर भूमिका

3.3.1 संयुक्त राष्ट्र: भारत संयुक्त राष्ट्र में स्थायी सदस्यता की दावेदारी करता रहा है। न्छ शांति मिशनों में भारत की भूमिका सराहनीय रही है।

3.3.2 BRICS, SCO, QUAD,G-20

BRICS में भारत की सक्रियता वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने का प्रयास है।

SCO में भारत की भागीदारी एशियाई सुरक्षा और सहयोग की दिशा में एक कदम है।

QUAD (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) इंडो-पैसिफिक में चीन की चुनौतियों से निपटने की रणनीति है।

4. विदेश नीति की समकालीन चुनौतियाँ

4.1 चीन का आक्रामक विस्तारवाद

विशेषत: लद्दाख क्षेत्र में चीनी गतिविधियाँ भारत की सुरक्षा नीति पर प्रभाव डालती हैं।

4.2 आतंकवाद और सीमा पार सुरक्षा: पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद भारत की विदेश नीति की प्राथमिक चुनौतियों में से एक है।

4.3 ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन: भारत को ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए अंतरराष्ट्रीय जलवायु प्रतिबद्धताओं को संतुलित रखना है।

4.4 प्रवासी भारतीय और वैश्विक भारतीय छवि: भारत की नीति में अब प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा और अधिकारों की रक्षा भी शामिल है।

भारत-जापान संबंध :

इतिहास और सांस्कृतिक जुड़ाव:

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, भारत ने जापानी पुनर्निर्माण का समर्थन किया था।

रणनीतिक और आर्थिक भागीदारी:

इन्फ्रास्ट्रक्चर: मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन, स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट।
जापान भारत में शीर्ष निवेशकों में से एक है।
सुरक्षा: क्वाड सहयोग, समुद्री अभ्यास)।
विकासरू जापान की सहायता से भारत के पूर्वोत्तार क्षेत्रों में भी विकास परियोजनाएँ।
अनूठी बात: जापान के साथ भारत के संबंध 'विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी' के रूप में घोषित हैं।

5. मोदी सरकार के अंतर्गत विदेश नीति (2014 से आगे)।

5.1 एक्ट ईस्ट नीति: पूर्वोत्तर राज्यों को ASEAN और पूर्व एशियाई देशों के साथ जोड़कर आर्थिक विकास और रणनीतिक गहराई प्रदान करना।

5.2 पड़ोसी पहले नीति :श्रीलंका, नेपाल, अफगानिस्तान, बांग्लादेश जैसे देशों के साथ सहयोग बढ़ाना।

5.3 वसुधैव कुटुंबकम का प्रसार: COVID–19 के दौरान श्वैक्सीन मैत्रीश के तहत भारत ने विश्व को सहायता भेजी।

5.4 डिजिटल डिप्लोमेसी और पब्लिक डिप्लोमेसी: सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से भारत ने अपनी वैश्विक छवि को सशक्त किया है।

6. विदेश नीति का भविष्य और संभावनाएँ:

1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता प्राप्त करना।
2. इंडो–पैसिफिक रणनीति में संतुलन बनाना।
3. आर्थिक कूटनीति को आगे बढ़ाना।
4. वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करना।
5. हरित ऊर्जा और जलवायु नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभाना।

निष्कर्ष – भारत की विदेश नीति की संतुलन, सहयोग और आत्मनिर्भरता का प्रमुख दृष्टिकोण अपनाया है। भारत किसी भी एक ध्रुव से न जुड़कर बहुध्रुववीय विश्व में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना चाहता है। यह नीति भारत को वैश्विक स्तर पर एक संतुलनकर्ता शक्ति के रूप में स्थापित कर रही है।भारत की विदेश नीति ने अपनी यात्रा में कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। परंतु इसमें निरंतरता और लचीलापन दोनों रहे हैं। गुटनिरपेक्षता से लेकर रणनीतिक साझेदारी तक, भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी है। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में भारत का बढ़ता कद, उसकी संतुलित विदेश नीति का प्रमाण है। भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध मौकों और चुनौतियों का मिश्रण हैं। जहां सांस्कृतिक निकटता, भौगोलिक जुड़ाव और आर्थिक सहयोग संभावनाएं पैदा करते हैं, वहीं सीमा विवाद, आतंकी गतिविधियाँ, और चीन जैसे बाहरी प्रभाव भारत की नीति को संतुलन और सतर्कता के साथ चलने के लिए बाध्य करते हैं।

भारत की विदेश नीति में 'पड़ोसी प्रथम ' एक केंद्रीय सिद्धांत है, जिसके अंतर्गत भारत ने अपने पड़ोसियों के साथ आर्थिक, रणनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सहयोग को प्राथमिकता दी है।'पड़ोसी प्रथम' नीति के साथ भारत ने क्षेत्रीय नेतृत्व, मानवीय सहायता और संयुक्त विकास का मार्ग चुना है जो भारत को दक्षिण एशिया में स्थिरता और समृद्धि का केंद्र बना सकता हैआने वाले समय में भारत को वैश्विक राजनीति में न केवल एक भागीदार बल्कि एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में देखा जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. John G. Stoessinger- "Challenge and Strategy: Rethinking India's Foreign Policy - Ministry of External Affairs, Government of India-
2. Nehru. J.L. India's Foreign Policy.
3. Rajiv Sikri. Challenge and Strategy: Rethinking India's Foreign Policy.
4. C.Raja Mohan- Crossing the Rubicon.
5. IDSA Reports on India's Strategic Affairs.
6. Articles from The Hindu, Indian Express, EPW-4- "India's Foreign Policy: Retrospect and Prospect", Sumit Ganguly
7. United Nations and BRICS documentation.
8. "Why Nations Go to War" (with Indian context editions 2- "Pax Indica: India and the World of the 21st Century" A Dr. Shashi Tharoor
9. NCERT: Class 12 Political Science Book (Contemporary World Politics
10. इतिहास और विकास के लिए: V.P. Dutt, Sumit Ganguly
11. आधुनिक चुनौतियों के लिए: Rajiv Sikri, Shivshankar Menon.
12. राजनीतिक दृष्टिकोण से: Shashi Tharoor
13. रणनीतिक गहराई के लिए: Nonalignment 2.0, Muchkund Dubeey.

****